

डॉ. केविन ई. फ्रेडरिक, वाल्डेन्सियन, व्याख्यान 1बी, वाल्लो के धर्मांतरण की जड़ें (1172-1207 ई.)

© 2024 केविन फ्रेडरिक और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. केविन फ्रेडरिक हैं, जो वाल्डेन्सियन का इतिहास पढ़ाते हैं। यह सत्र 1 है, वाल्डो के धर्मांतरण की जड़ें।

सुप्रभात। मेरा नाम केविन फ्रेडरिक है। मैं उत्तरी कैरोलिना के वाल्डेस में वाल्डेन्सियन प्रेस्बिटेरियन चर्च का पादरी हूँ।

मैं इस मण्डली में लगभग 10 वर्षों से सेवा कर रहा हूँ। इस मण्डली के साथ अपनी भूमिका के हिस्से के रूप में, जब मैं यहाँ आया, तो मुझे एहसास हुआ कि वाल्डेन्सियन लोगों के इतिहास को विकसित करने की वास्तव में आवश्यकता है क्योंकि इस मण्डली की पृष्ठभूमि में बहुत समृद्ध विरासत है। इस चर्च के 50% से अधिक सदस्य वाल्डेन्सियन वंश के हैं।

उस दृष्टिकोण से, मैंने वाल्डेन्सियन इतिहास पर कई उपदेश विकसित किए हैं। हम वाल्डेन्सियन आंदोलन के संस्थापक पीटर वाल्डो से शुरुआत करने जा रहे हैं। हम वास्तव में उन्हें वाल्डो कहते हैं।

फ्रेंच में उनका नाम वाल्डेज़ था, और वे एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने इस आंदोलन के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेकिन मैं सबसे पहले ल्यूक 18 से शास्त्रों को पढ़ना शुरू करना चाहूँगा। यह उन तीन महत्वपूर्ण मुख्य शास्त्रों में से एक है, जिनसे वाल्डो ने प्रेरणा ली।

लूका 18 से, एक शासक ने उससे पूछा, अच्छे गुरु, मुझे अनन्त जीवन पाने के लिए क्या करना चाहिए? यीशु ने उससे कहा, तू मुझे अच्छा क्यों कहता है? कोई भी अच्छा नहीं है, केवल परमेश्वर ही अच्छा है। तुम आज्ञाओं को जानते हो: तुम व्यभिचार नहीं करोगे, तुम हत्या नहीं करोगे, तुम चोरी नहीं करोगे, तुम झूठी गवाही नहीं दोगे, और तुम अपने पिता और अपनी माँ का सम्मान करोगे। उसने उत्तर दिया कि मैंने अपनी युवावस्था से ही इन सभी का पालन किया है।

जब यीशु ने यह सुना, तो उसने उससे कहा, “अभी एक बात बाकी है। अपनी सारी सम्पत्ति बेचकर कंगालों में बाँट दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा। फिर आकर मेरे पीछे हो ले।”

लेकिन जब उसने यह सुना, तो वह उदास हो गया, क्योंकि वह बहुत अमीर था। यीशु ने उसे देखा और कहा कि धनवानों के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है। वास्तव में, ऊँट का सुई के छेद में से निकल जाना, धनवान के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से कहीं अधिक आसान है।

यह प्रभु का वचन है। परमेश्वर का धन्यवाद। अच्छे गुरु, अनन्त जीवन पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए? सदियों से ईसाई लोग परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते पर विचार करते हुए खुद से यह सवाल पूछते रहे हैं।

और अक्सर, जिस तरह से उन्होंने अपना जीवन जीने का चुनाव किया, वह उस उत्तर से काफी अलग था जो यीशु ने उस दिन अमीर युवक को दिया था। अमीर युवक टोरा की आज्ञाओं को पूरा करने के लिए बाइबल के निर्देशों को लागू करने से संतुष्ट नहीं था और अपने जीवन में अर्थ की अधिक गहराई की तलाश कर रहा था। जवाब में, यीशु ने अमीर युवक को चुनौती दी कि अपनी संपत्ति बेच दो और पैसे गरीबों को दे दो, और तुम्हारे पास स्वर्ग में खजाना होगा।

तो फिर आओ और मेरे पीछे चलो। इस युग में या किसी भी युग में बहुत कम लोगों ने इस निर्देश का अक्षरशः पालन किया है। यह इतना संपूर्ण और मांग वाला है कि इसके लिए पूरी आज्ञाकारिता की आवश्यकता है।

यह कहानी बारहवीं सदी के वाल्डो नामक व्यक्ति द्वारा शुरू किए गए आंदोलन की उत्पत्ति का वर्णन करती है, जिसने बाइबिल के आदेश का सामना करने पर, यीशु मसीह के निर्देशों के अनुसार जीने का प्रयास किया। बारहवीं सदी के अंत में फ्रांस के ल्योन के व्यापारिक व्यापार में अपना भाग्य बनाने वाले एक धनी व्यापारी, वाल्डो, फ्रेंच में वाल्डेज़, कैथोलिक चर्च के प्रति समर्पित एक धार्मिक व्यक्ति भी थे। एक संपन्न नागरिक, एक व्यापारिक नेता और एक धर्मनिष्ठ ईसाई के रूप में, वाल्डो रोमन चर्च के नेता के साथ अच्छे संबंध रखते थे।

कुछ अभिलेखों से संकेत मिलता है कि उन्होंने ल्योन के चर्च में नेतृत्व की भूमिका निभाई होगी। ल्योन का बढ़ता शहर बारहवीं सदी के फ्रांस में एक सांस्कृतिक और समृद्ध व्यापारिक समुदाय था। यह रोमन चर्च का एक क्षेत्रीय केंद्र भी था, जिसका अपना बिशप था।

वाल्डो के धर्म परिवर्तन से लेकर गरीबी में जीवन जीने तक के वर्षों में, वाल्डो ने चर्च के दो नेताओं को, जो लैटिन भाषा में पारंगत थे, क्षेत्र की आम भाषा में उनके लिए बाइबिल के कुछ हिस्सों का अनुवाद करने का काम सौंपा था, ताकि वह खुद ही शास्त्रों को पढ़ और अध्ययन कर सकें। बारहवीं शताब्दी में ऐसा अनुरोध असामान्य था, और इसकी सापेक्ष अस्पष्टता के कारण, इसने कैथोलिक पदानुक्रम का ध्यान आकर्षित नहीं किया। इसलिए, वाल्डो द्वारा बाइबिल के कुछ हिस्सों का स्थानीय भाषा में अनुवाद करने का अनुरोध चर्च पदानुक्रम के रडार के नीचे चला गया और इसे अवैध नहीं माना गया।

वाल्डो ने इन अनुवादित शास्त्रों का अध्ययन किया और धार्मिक नेताओं के साथ उन पर चर्चा की। फिर उसने उनके अर्थ की शाब्दिक व्याख्या की क्योंकि वे उसके अपने जीवन पर लागू होते थे। हमारे लिए यह अनुमान लगाना गलत होगा कि बारहवीं सदी में वाल्डो के लिए अपनी संपत्ति बेचना, गरीबों को सारी संपत्ति दे देना और गरीबी का जीवन अपनाना हमारी सदी के किसी व्यक्ति के लिए जितना आसान होगा, उससे कहीं ज्यादा आसान होता।

बारहवीं शताब्दी में, दान के अलावा कोई सामाजिक सुरक्षा जाल जैसी कोई चीज़ नहीं थी, जबकि आज, गरीबों के लिए सरकारी और गैर-लाभकारी सेवाओं का संयोजन प्रदान किया जाता है।

यह माना जाना चाहिए कि वाल्डो ने जो निर्णय लिया, वह किसी भी युग में रहने वाले व्यक्ति के लिए विश्वास की एक बड़ी छलांग थी। वाल्डो के जीवन और धर्मांतरण के बारे में संक्षिप्त ऐतिहासिक दस्तावेज उपलब्ध हैं।

हालांकि, कुछ तथ्य सामने आए हैं जो ऐतिहासिक संदर्भ बिंदु प्रदान करते हैं। ऐतिहासिक अभिलेखों से पता चलता है कि वर्ष 1172 में, फ्रांस और जर्मनी दोनों में भयंकर सूखा पड़ा था। मौसम की स्थिति ने विनाशकारी अकाल पैदा कर दिया, जिसका विशेष रूप से क्षेत्र के गरीबों पर बुरा असर पड़ा।

वाल्डो ने व्यापारिक व्यापार में अपना भाग्य बनाया था और वह काफी धनी व्यक्ति था। वाल्डो, वाल्डो, 27 मई से 1 अगस्त 1072 के बीच, सप्ताह में तीन दिन नियमित रूप से रोटी, सूप और मांस मांगता था। उस वर्ष 15 अगस्त को, असम्पशन के पर्व पर, उसने सड़कों पर गरीबों को पैसे बांटे, यह कहते हुए कि कोई भी मैथ्यू 6 से भगवान और धन की सेवा नहीं कर सकता। इस धनी व्यापारी के अजीब व्यवहार को देखने वाले दर्शकों और दोस्तों ने उसकी समझदारी पर सवाल उठाना शुरू कर दिया।

फिर भी, उन्होंने कथित तौर पर अपने दुश्मनों से बदला लेने के लिए अपने कार्यों को उचित ठहराया, जिन्होंने उन्हें पैसे और चीजों को बनाने के लिए गुलाम बना दिया था, और उन्होंने यह भी कहा कि उन्होंने अपने श्रोताओं को धन के बजाय भगवान पर भरोसा करना सिखाने के लिए ऐसा किया था। धीरे-धीरे, उनके दोस्तों और व्यापारिक संपर्कों, जिनमें उनकी खुद की पत्नी भी शामिल थी, ने सोचा कि वह पूरी तरह से पागल हो गए हैं। उनकी पत्नी, जो अपनी समृद्ध जीवनशैली और जीने के तरीके को बहुत महत्व देती थी, ने उन्हें अपना मन बदलने के लिए मनाने की पूरी कोशिश की और उनके साथ तर्क करने के लिए उनके सबसे करीबी दोस्तों की मदद ली।

लेकिन वाल्डो का मन पक्का था। इससे वाल्डो और उसके परिवार के बीच बहुत बड़ी दरार पैदा हो गई, खासकर तब जब वाल्डो ने अपनी पत्नी और दो बेटियों के लिए अपनी संपत्ति और संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा आवंटित करने के लिए कानूनी व्यवस्था करना शुरू कर दिया। दान देने और मसीह का अनुसरण करने के लिए शास्त्र के आदेश का पालन करने के लिए, वाल्डो ने खुद को अपने परिवार से दूर कर लिया, प्रभावी रूप से खुद को तलाक दे दिया।

वे उसके जीवन में आए इस अचानक परिवर्तन को समझ नहीं पाए, और फिर भी वह उनके लिए बहुत परवाह करता था। शिष्य बनने का उसका आह्वान अब उसका प्राथमिक ध्यान बन गया। एक ऐसे समाज में जो काफी हद तक निरक्षर था, मौखिक परंपरा ने अपने इतिहास के संरक्षण और शिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

12वीं सदी में यूरोप में 90% से ज़्यादा लोग निरक्षर थे। केवल अमीर और शासक वर्ग ही शिक्षा की विलासिता को वहन कर सकता था। ऐसी सांस्कृतिक सेटिंग में, कहानी सुनाना, कविता और लंबी गाथाएँ समाज के भीतर ज्ञान और जानकारी को आगे बढ़ाने का प्राथमिक साधन बन गईं।

वाल्डो और उनके अनुयायियों ने लोगों की भाषा में पवित्रशास्त्र के शब्दों की घोषणा और शिक्षा देकर मौखिक संचार के महत्व पर अधिक ध्यान केंद्रित किया। यह रोमन कैथोलिक चर्च में एक

क्रांतिकारी परिवर्तन था, जिसका मानना था कि पवित्रशास्त्र की भाषा लैटिन तक ही सीमित होनी चाहिए, जो कि आबादी के 1% से भी कम लोगों द्वारा समझी जाने वाली भाषा है। लोगों की भाषा में परमेश्वर के वचन की वाल्डो की घोषणा शुरू में बेहद लोकप्रिय और अच्छी तरह से प्राप्त हुई थी।

वाल्डो के मंत्रालय की प्रभावशीलता को रोमन कैथोलिक पदानुक्रम द्वारा एक खतरा माना जाता था, जिन्होंने वाल्डो के अनुयायियों और उनके द्वारा धर्मग्रंथों की सार्वजनिक घोषणा की निंदा की थी। उन्हें और उनके अनुयायियों, जिन्हें ल्यों के गरीब कहा जाता था, को 1184 में बहिष्कृत कर दिया गया था। बाद में, 1215 में, उन्हें विधर्मी के रूप में निंदा की गई।

चर्च द्वारा ल्यों के गरीबों का उत्पीड़न तेजी से संगठित किया गया, और 14वीं शताब्दी तक, रोमन कैथोलिकों द्वारा विधर्म और उसके सभी अनुयायियों को नष्ट करने के लिए धर्मयुद्ध शुरू किया गया। कई सौ वर्षों की इस अवधि में, वाल्डो के धर्मांतरण के इर्द-गिर्द तीन अलग-अलग मिथक वाल्डेन्सियन समुदायों के भीतर उभरे, जिन्होंने 1172 में फ्रांस और जर्मनी को प्रभावित करने वाले अकाल से जुड़े तथ्यात्मक आंकड़ों को दबा दिया। समय बीतने के साथ-साथ तथ्यों को काफी हद तक भुला दिया गया था, और फिर भी पश्चिमी यूरोप में वाल्डेन्सियन समुदायों में उभरे मिथकों ने 1172 में ल्यों शहर के गरीबों के लिए अकाल से पैदा हुई पीड़ा के प्रति वाल्डो की प्रतिक्रिया की यादों की व्याख्या की और उन्हें संरक्षित किया।

इतिहासकार और वाल्डेन्सियन जियोर्जियो ट्यूरिन, 1980 में लिखी गई वाल्डेन्सियन, द फर्स्ट आठ हंड्रेड इयर्स के लेखक, जो खुद एक वाल्डेन्सियन पादरी और इतिहासकार हैं, ने वाल्डो के धर्म परिवर्तन के इर्द-गिर्द तीन कहानियों की पहचान की है। वाल्डेन्सियन लोगों के इतिहास को संरक्षित करने और संप्रेषित करने के साधन के रूप में, हमारे लिए इनमें से प्रत्येक कहानी पर विचार करना महत्वपूर्ण है क्योंकि वे वाल्डेन्सियन आंदोलन की उत्पत्ति और प्रारंभिक इतिहास के बारे में बहुत हद तक तरलता प्रदर्शित करते हैं। पाठक के लिए यह समझना अनिवार्य है कि वाल्डेन्सियों के इतिहास के निर्माण में मिथकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जैसा कि हम बाद के उपदेश में देखेंगे, जो वाल्डेन्सियन आंदोलन की उत्पत्ति को समझने में मिथक-निर्माण की भूमिका को संबोधित करता है।

महान उत्पीड़न के समय में वाल्डेन्सियन लोगों की पहचान और आस्था के संकल्प को स्थापित करने और मजबूत करने में कहानी कहने की महत्वपूर्ण भूमिका थी। यह दिलचस्प है कि कैसे ये तीनों कहानियाँ पिछली सदी में खोजे गए ऐतिहासिक तथ्यों को बढ़ाने का काम करती हैं। तीनों कहानियाँ वाल्डो के जीवन के सांस्कृतिक संदर्भ में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं।

पहली कहानी। एक दिन प्रार्थना के बाद दोस्तों से बात करने के लिए रुके वाल्डो ने एक गायक को सड़कों पर घूमते हुए और वीणा बजाते हुए गाते हुए सुना। गायक ने सेंट एलेक्सिस के जीवन के बारे में एक कहानी गाई, जो एक कुलीन परिवार का एक अमीर और बिगड़ेल बेटा था।

अपनी शादी की रात, अपनी संपत्ति और शानदार जीवनशैली के कारण अपराध बोध की लहर में, एलेक्सिस ने अचानक अपनी दुल्हन को छोड़ने और पवित्र भूमि की तीर्थयात्रा करके प्रायश्चित्त

करने का फैसला किया। वहाँ, आत्म-वंचना और पीड़ा के अपने जीवन के परिणामस्वरूप, वह इतना विकृत हो गया कि वर्षों बाद, अपने मूल शहर में घर लौटने पर किसी ने उसे पहचाना नहीं। एक बेघर बदमाश के रूप में बहिष्कृत, उसे शहर में एक सीढ़ी के नीचे मरने के लिए अकेला छोड़ दिया गया था, और उसकी मृत्यु के बाद तक कोई भी उसकी पहचान नहीं जान पाया।

जैसा कि किंवदंती है, वाल्डो इस गायक के गीत से इतना प्रभावित हुआ कि उसने गायक को अपने घर आने, भोजन करने और रात बिताने के लिए आमंत्रित किया। गीत को फिर से सुनने पर, वाल्डो को कहानी में अपनी पहचान का एहसास होने लगा और उसने अपने पुराने विलासितापूर्ण जीवन को त्यागते हुए बदलाव करना शुरू कर दिया। 12वीं शताब्दी में, यात्रा करने वाले गायक, जिन्हें टूबाडोर भी कहा जाता था, यूरोप में बेहद लोकप्रिय थे।

जैसे-जैसे वे अपने संगीत और अपनी कहानियों को शहर-शहर ले गए, उन्होंने नए विचार और बोलने के नए तरीके भी फैलाए, जिसने धनी और व्यापारी वर्ग को प्रभावित किया। टूबाडोर के गीतों में व्यक्त किए गए प्रमुख विषयों में से एक दरबारी प्रेम की अवधारणा थी, जिसने रिश्तों और विवाह के भीतर प्रेम के सार्वजनिक रूप से अनुष्ठानिक प्रदर्शनों की भूमिका को उंचा किया। दरबारी प्रेम की अवधारणा ने अंततः विवाहित जोड़ों के बीच समानता की एक बड़ी डिग्री को बढ़ावा दिया, जो उस समय तक समाज में मौजूद नहीं थी, लेकिन इसने एकल महिला की भूमिका को भी कम करके आंका और अधीनस्थ किया।

पुरुष-महिला संबंधों के भीतर यौन संकेत और नाटक भी कवि के संगीत के विषय थे। वाल्डो के जीवनकाल में टूबाडोर्स की लोकप्रियता को देखते हुए, यह कहानी निश्चित रूप से प्रशंसनीय है, लेकिन यह उस अकाल के संदर्भ को ध्यान में नहीं रखती है जिसने उसके धर्म परिवर्तन के समय समुदाय को प्रभावित किया था। कहानी संख्या दो।

एक धनी व्यापारी होने के नाते और हर दिन गरीब लोगों की भीड़ से घिरे रहने के कारण, वाल्डो समय के साथ विवेक से परेशान हो गया और उसने अपने एक मित्र से सलाह और ज्ञान प्राप्त किया जो पादरी और धर्मशास्त्री के रूप में चर्च की सेवा करता था। बहुत लंबी बातचीत के बाद, पादरी वाल्डो की अथक पूछताछ से थक गया और उसने सुझाव दिया कि वह मैथ्यू 19, श्लोक 21 को पढ़े, जिसमें यीशु एक अमीर युवा शासक से कहता है कि वह जाकर अपनी संपत्ति बेच दे और उसके पीछे आ जाए। इन शब्दों का वाल्डो पर इतना शक्तिशाली प्रभाव पड़ा कि उसने कानून के अनुसार उनका पालन किया और यीशु की आज्ञाओं के अनुसार अपने जीवन को जीने की कसम खाई।

दूसरी कहानी वाल्डो के ल्योन में कैथोलिक चर्च के नेताओं के साथ चल रहे संबंधों को उजागर करती है। एक धनी व्यापारी के रूप में, वाल्डो चर्च का संरक्षक और एक आम नेता था, और इस तरह की बातचीत, या यहां तक कि पुजारियों और अन्य नियुक्त नेताओं के साथ बातचीत की एक श्रृंखला, संभवतः तब हुई होगी जब वाल्डो अपने जीवन में आह्वान की भावना से जूझ रहा था। इस कहानी के भीतर, धर्मग्रंथ सीधे उसी मार्ग पर ध्यान केंद्रित करता है जो वाल्डो के अपने जीवन को ईसाई धर्म की अधिक कट्टरपंथी अभिव्यक्ति में बदलने के निर्णय में सहायक था।

हालांकि, यह मई और अगस्त 1172 के बीच वाल्डो द्वारा गरीबों के साथ की गई प्रत्यक्ष बातचीत को छोड़ देता है, जब वह अकाल से निपटने के लिए अपने आस-पास के लोगों को बहुत तकलीफ पहुँचा रहा था। तीसरी कहानी। वाल्डो ने एक करीबी निजी दोस्त खो दिया था जो ल्योन में एक साथी व्यापारी था।

वाल्डो के दोस्त की अचानक एक भोज में मौत हो गई, जिसमें वे दोनों शामिल थे। अपने दोस्त की मौत पर दुखी और अपनी मृत्यु के अर्थ पर विचार करते हुए, वाल्डो ने खुद से पूछा, क्या होगा अगर मौत मुझे भी इसी तरह से पकड़ ले? क्या मेरी आत्मा इस यात्रा के लिए तैयार होगी? कई हफ्तों तक आत्मा की खोज करने के बाद, उसने अपनी सारी संपत्ति और अपने व्यवसाय से खुद को अलग करने का फैसला किया। तदनुसार, वाल्डो ने फिर धन और व्यक्तिगत संपत्ति के बंधनों से मुक्त होकर एक नया जीवन शुरू करने का फैसला किया।

इस कहानी में, वाल्डो की अपनी मृत्यु का ध्यान और प्रेरणा उसके कार्यों को प्रभावित करने वाला प्राथमिक चालक है, जो विश्वास और पहचान का संकट पैदा करता है जो ईश्वरीय निर्णय की अपरिहार्यता की भावना से प्रेरित था। भोजन फिर से इस कहानी में है, और यह वाल्डो के धर्मांतरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि यह एक ऐसा भोज है जो वाल्डो और उसके दोस्त को उसी क्षण एक साथ लाता है जब उनका दोस्त मर जाता है। लेकिन कहानी एक अस्तित्वगत संकट की बात करती है और वाल्डो के आध्यात्मिक रूपांतरण को निर्देशित करने में शास्त्र की भूमिका का कोई उल्लेख नहीं करती है।

वाल्डो के धर्म परिवर्तन की पौराणिक उत्पत्ति और वाल्डेन्सियन आंदोलन की शुरुआत के इर्द-गिर्द ये सभी कहानियाँ एक ऐसी संस्कृति में कहानी सुनाने के महत्व को बताती हैं जो 95% से ज्यादा निरक्षर थी। दक्षिणी फ्रांस से लेकर इतालवी प्रायद्वीप तक, उत्तर मध्य जर्मनी से लेकर ऑस्ट्रिया और बोहेमिया तक के प्रभाव वाले क्षेत्र में, वाल्डेन्सियन प्रचारक जिन्होंने धर्मग्रंथों की पूरी किताबें याद कर ली थीं, वे यात्रा करते हुए मंत्रालय में लगे हुए थे, जोड़े में यात्रा करते हुए वे कहानी सुनाने के ज़रिए सुसमाचार का संदेश देते थे। वाल्डो के धर्म परिवर्तन के बारे में ये तीनों कहानियाँ अलग-अलग हैं, लेकिन वे प्रत्येक बाद की पीढ़ियों को उनके विश्वास की उत्पत्ति के बारे में शिक्षित करने की एक गंभीर इच्छा को प्रदर्शित करती हैं ताकि प्रत्येक आस्तिक उन विशिष्ट कारकों को समझ सके जो ईसाई धर्म की उनकी व्याख्या को रोमन कैथोलिकों से अलग करते हैं।

यूरोप के विशाल भौगोलिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में, जहाँ इस आंदोलन के अनुयायी विभिन्न संस्कृतियों में रहते थे और अलग-अलग भाषाएँ बोलते थे, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि वाल्डो के धर्मांतरण के कई संस्करण होंगे। जब समान विषयों के लिए मूल्यांकन किया जाता है, तो वे सभी वाल्डो के धन और सापेक्ष विलासिता का जीवन छोड़ने, गरीबी का जीवन अपनाने और जनता के बीच सुसमाचार का प्रचार करने के निर्णय को व्यक्त करते हैं। इन तीनों कहानियों में से प्रत्येक कहानी एक व्यक्तिगत धर्मांतरण को दर्शाती है जो स्वयं की सेवा करने की जीवन शैली से दूर है और गरीबी को अपनाने, सुसमाचार फैलाने और गरीबों की ज़रूरतों को पूरा करने के एक नए जीवन की ओर अग्रसर है।

1172 में ल्योन के ऐतिहासिक संदर्भ के बारे में जो तथ्य उभर कर आए हैं, उनके आधार पर जांच करने पर यह संभव है कि इन तीनों कहानियों के तत्व इस बात को दर्शाते हैं कि वाल्डो के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन लाने के लिए क्या हुआ था। हालाँकि, ऊपर बताई गई कहानियों में से किसी एक में इसका उल्लेख हो या न हो, यह परिवर्तन शास्त्रों की जाँच करने और गहन आत्म-खोज की अवधि में शामिल होने के बाद होता है। इस प्रक्रिया से, वाल्डो को जीवित उपस्थिति की एक नई समझ और यीशु मसीह के आह्वान की अपनी व्यक्तिगत पहचान मिली।

जॉर्ज ओ'टॉर्न इन कहानियों के अपने विश्लेषण में बताते हैं कि वाल्डो के अपने धर्म परिवर्तन से दो बहुत अलग परिणाम सामने आए। सबसे पहले, उनके अपने जीवन में जो सुसमाचार बताया गया था, उसे सभी लोगों तक पहुँचाया जाना चाहिए, ताकि उन्हें प्रतिक्रिया देने का अपना अवसर मिले। दूसरा, शिष्यत्व के लिए आह्वान के रूप में उन्होंने मत्ती 18 से अपने और अपने अनुयायियों के लिए शास्त्रीय आदेशों की व्याख्या की, जिसका अर्थ था कि वे अपने धन और संपत्ति से पूरी तरह से अलग हो जाएँ और खुद को संपत्ति और धन का उपयोग गरीबों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए करें क्योंकि वे भी गरीब हो गए हैं।

वाल्डो की प्रतिक्रिया ने पुनरुत्थान जीवन की शक्ति को प्रतिबिंबित किया, जिसने न केवल उसके जीवन को प्रभावित किया, बल्कि कई लोगों के जीवन को भी प्रभावित किया, जिन्होंने स्वयं सुसमाचार संदेश सुना और गरीबी की शपथ ली और सुसमाचार की सार्वजनिक घोषणा में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की। वाल्डो के जीवन और विश्वास की गवाही में, पूर्व-सुधार ईसाई सोच और व्यवहार की सबसे पुरानी और लगातार संगठित गवाही की शुरुआत हुई और गतिमान हुई। ईसाई धर्म की इस अनूठी गवाही को नष्ट करने के रोमन कैथोलिक चर्च के ठोस प्रयासों के बावजूद, यह 350 साल बाद प्रोटेस्टेंट सुधार की सुबह तक कायम रहा और प्रबल रहा।

यह ध्यान देने योग्य है कि पहला नाम पीटर, जिसे अक्सर वाल्डो का संदर्भ देते समय शामिल किया जाता है, वाल्डो के नाम के हिस्से के रूप में उनके जीवनकाल में उत्पन्न किसी भी दस्तावेज़ में सूचीबद्ध नहीं है। यह केवल 200 साल बाद, 14वीं शताब्दी में है, कि पीटर नाम पहली बार वाल्डो को दिया गया था। इतिहासकारों का मानना है कि वाल्डेन्सियन के खिलाफ उत्पीड़न की ऊँचाई के दौरान, यह तब था जब वाल्डेन्सियन ने पीटर नाम को जिम्मेदार ठहराया था, जो वैसे, यीशु मसीह का पहला और सबसे बड़ा शिष्य था।

वाल्डो और वाल्डेन्सियन आंदोलन को वैध बनाने के साधन के रूप में वाल्डो को यह नाम देकर, उन्हें ईसाई धर्म की उत्पत्ति और उसके पहले नेता, प्रेरित पतरस, यीशु मसीह के स्वर्गारोहण के बाद से जोड़ दिया गया। प्रारंभिक चर्च का यह संदर्भ और प्रेरितिक उत्तराधिकार के माध्यम से आंदोलन के संबंधों का सुझाव, सताए गए वाल्डेन्सियन के लिए ताकत और दृढ़ विश्वास का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन गया, जब रोमन कैथोलिक चर्च और आसपास की संस्कृति ने उन्हें विधर्मी करार दिया और उनके पूर्ण विनाश की मांग की। रोमन चर्च द्वारा किए गए इनक्विजिशन और अन्य प्रकार के उत्पीड़न के सामने, वाल्डेन्सियन ने ईसाई चर्च की उत्पत्ति के साथ संबंधों पर जोर देने में आराम महसूस किया, जिसे उस समय की सत्ताधारी शक्तियों द्वारा भी सताया गया था।

प्रेरितिक उत्तराधिकार के विचार और वाल्डेन्सियन धर्म की उत्पत्ति को इस श्रृंखला में एक धर्मोपदेश में अधिक विस्तार से खोजा गया है, जिसका शीर्षक है, इतिहास की छाया से बाहर।

यह डॉ. केविन फ्रेडरिक हैं, जो वाल्डेन्सियन का इतिहास पढ़ाते हैं। यह सत्र 1 है, वाल्डो के धर्मांतरण की जड़ें।